RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 35 हल्द्वानी सम्वत् 2079 सोमवार 30 जनवरी 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

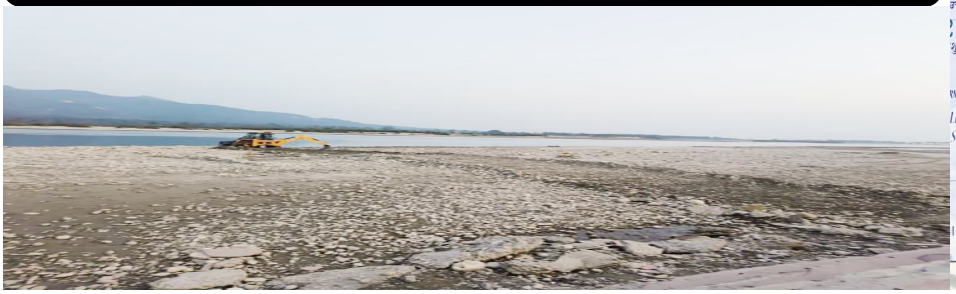

मुख्यमंत्री के विधानसभा क्षेत्र में हलचल

शारदा आरती की नई शुरुआत

कार्यालय प्रतिनिधि

टनकपुर/चम्पावत। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के विधानसभा क्षेत्र में इस बार जिस प्रकार से शारदा घाट पर सायंकालीन आरती को लेकर शुरुआत हुई है वह आने वाले समय के लिये नई शुरुआत है। क्योंकि माल-भाबर टनकपुर में जिस प्रकार की लूट मची है उसे नियन्त्रित करने के लिये यह सब जरूरी भी है।

'नमामि गंगे' अभियान के तहत जिस प्रकार की पहल पूरे देश में चल रही है उसी क्रम में शारदा घाट पर भी आरती का प्रस्ताव रहा और 'शारदा आरती' का भव्य आयोजन हुआ। नमामि गंगे की शुरुआत गंगा आरती के रूप में पहले ही हो चुकी थी लेकिन इसे और भी भव्य आकार देने के लिये शासन का ध्यान इस ओर गया। मुख्यमंत्री लगातार चार बार इस घाट में आ चुके हैं और इस घाट के उद्धार के लिये घोषणा हो चुकी है। सबको इन्तजार है कि किस दिन यह घाट भव्य रूप में बनकर तैयार होगा और रोजगार के नए द्वार खुलेंगे।

उल्लेखनीय है कि टनकपुर शहर बहुत ही खुला हुआ बेहतरीन स्थान है लेकिन पिछले कुछ सालों में जिस प्रकार से यहाँ लोगों की नजर लगी है अनाप सनाप भीड़ शहर व आसपास लग चुकी है। साथ ही भूमि घेरने के लिये बाहर से आने वालों का प्रतिशत बेतहाशा हुआ है। ऊपर से खनन मामले को लेकर गुट सक्रिय रहे हैं। ऐसे में पूर्णागिरी के मुख्य पड़ाव टनकपुर में विकास का रास्ता बनने की बजाए अराजकता फैलले लगी। पूर्णागिरी मेले के कारण पूरे उत्तरभारत से जन सैलाब यहाँ उमड़ता है और शारदा घाट भी उनकी श्रद्धा का स्थल है लेकिन इस घाट के बनने-बिगड़ने का खेल आज तक जारी रहा। प्राकृतिक आपदा और बाढ़ में घाट के बह जाने की बात तो सच है लेकिन इससे भी बड़ा सच यह है कि जिस श्रद्धाभाव से यहाँ कार्य होने चाहिये थे शायद नहीं हो पाए। यही कारण है कि यह विकसित नहीं हो पाया। जबकि इसके विकसित होने पर पर्यटकों के लिये सुखद होता और स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिलते।

इस बार जब आरती अवसर पर सीएम ने ऐलान किया है तो उम्मीद की जा सकती है कि कोई रास्ता तो निकल ही जायेगा। सीएम ने कहा कि टनकपुर में पर्यटन की अपार सम्भावनाएं हैं। उन्होंने करोड़ों रुपये की योजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास भी किया। फिलहाल यह तो हो ही चुका है कि नमामि गंगे की पहल का प्रभाव क्षेत्र में है और इसकी भव्यता के लिये प्रस्ताव है और आने वाले समय में हरिद्वार ऋषिकेश की तर्ज पर दिखाई देगा।

पर्यावरण बनाम विकास

भगवान बद्रीविशाल के शरदकालीन पूजा स्थल और आदि शंकराचार्य की तपस्थली में लम्बी-गहरी होती दरारें

विनीत नारायण

उत्तराखण्ड में भगवान श्री बद्रीविशाल के शरदकालीन पूजा स्थल और आदि शंकराचार्य की तपस्थली ज्योतिर्मठ (जोशी मठ) नगर में विगत महीने से बड़ी लम्बी लम्बी दरारें आ गईं, वे निरन्तर गहरी व लम्बी होती जा रही हैं। वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों और धार्मिक लोगों के अनुसार बेतरतीब ढंग से हुए विकास और हर वर्ष बढ़ते पर्यटकों के सैलाब को इसका कारण माना जा सकता है।

जोशीमठ नगर बद्रीनाथा धाम से 45 किमी पहले ही अलकनन्दा नदी के किनारे वाले ऊँचे तेज ढलान वाले पहाड़ पर स्थित है। यहाँ पर फौजी छावनी और नागरिक मिलाकर 50,000 के लगभग निवासी रहते हैं। साल के छह महीने की गर्मियों के दौरान यह संख्या पर्यटकों के कारण दुगुनी हो जाती है। बद्रनाथ धाम में दर्शनार्थी तो आते ही हैं, साथ ही जोशीमठ से 4 किमी पैदल चढ़ कर औली पहुँचा जा सकता है। इसलिए औली जाने वाले ज्यादातर पर्यटक भी रात्रि विश्राम जोशीमठ में ही करते हैं। यहाँ से बद्रीनाथ धाम जाने के लिये 12 किमी नीचे की ओर विष्णुगंगा और अलकनन्दा के मिलन विष्णुप्रयाग तक उतरना पड़ता है, यहाँ विष्णुप्रयाग जल विद्युत परियोजना (जेपी ग्रुप) का निर्माण कार्य चल रहा है। यहाँ बिजली बनाने के लिये बड़ी-बड़ी सुरंगे कई वर्षों से बनाई जा रही हैं, जिनमें से अधिकांश बन चुकी हैं। जोशीमठ के नीचे दरकने और दरारें आने की मुख्य वजह ये सुरंगें बताई जा रही हैं क्योंकि बारूद से विस्फोट करके ही इन्हें बनाया जाता है। इस कारण पहाड़ में दारारें आना स्वाभाविक है। यह कार्य चार दरकों से पूरे हिमालय विशेषकर गढ़वाल और कुमाऊँ क्षेत्र में हो रहा है। बिजली बनाने के लिए कई सौ परियोजनाएं यहाँ चल रही हैं। मैदानों को दी जाने वाली बिजली बनाने के लिये कई दशकों से यहाँ अंधाधुंध व बेतरतीब ढंग से हिमालय से सुरंगे, सड़कों और पुलों का निर्माण जारी है। अयोध्या से जुड़े संदीप जी द्वारा साझी की गई जानकारी के अनुसार उत्तराखण्ड स्थित बद्री, केदार, यमुनोत्री व गंगोत्री धामों के दर्शन करके इसी जन्म में मोक्ष पाने की सस्ती लालसा के पिपासुओं की भीड़ और नवधनाढ्यों की पहाडों में मौन मस्ती भी यहाँ प्राकृतिक संसाधनों पर भारी पड़ी है। इस कारण समूचा गढ़वाल हिमालय क्षेत्र तेजी से नष्ट हो रहा है। जबकि यह देवात्मा हिमालय का सर्वाधिक पवित्र क्षेत्र माना जाता है। इसकी भौगोलिक स्थिति का स्कन्ध पुराण में भी विस्तृत वर्णन मिलता है।

यहाँ कदम-कदम, मोड़-मोड़ पर प्राचीन ऋषि मुनियों के आश्रम और पौराणिक देवस्थान स्थित हैं। इन्हीं पर्वतों से गंगा व यमुना जैसी

शेष पृष्ठ 2 पर

जोशीमठ के नाम

(ईश्वर कृपा की प्रार्थना के साथ)

-सुनील झा

काँपती है दुनिया
तालाब में कंकड़ पड़ने से
जैसे काँपता है चेहरा पानी में।
दूर पहाड़ पर सूरज चमकता है
चोटी पर उसके बर्फ पिघलती है
जमीन पिघलती है उसके अन्दर।
बर्फ हो गई है मिट्टी भी
फिसलते जा रहे हैं घर
फिसलता जा रहा है संसार
फिसलती जा रही है जिन्दगी
छूटता जा रहा है सब कुछ
जैसे रेत फिसलती है मुट्ठी से।
किसे बर्फ समझूँ किसे चट्टान
किसे शान्ति, किसे तूफान,
खींच रही है प्रकृति ही जमीन
पाँवों के नीचे से।
कौन सा यज्ञ करूँ कि
इसे बचा लूँ
हमारी इस विषम निराशा से निकालने की
कुछ भी करने की मजबूरी दर्शाता है।
कोई तो प्रायश्चित होगा
कोई तो होगा विधान भी
कि लौटा दूँ प्रकृति को वह सब
जो उस से छिन गया है
इस तूफान में जमा लूँ पाँव
जो उखड़ रहा है
बचा लूँ वह संसार जो बिखर रहा है।

(मुम्बई)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

गणतंत्र के रास्ते पर कचरा मत करो

गणतंत्र दिवस की बधाई। इस बार भी २६ जनवरों को देशभर में गणतंत्र दिवस पर देश की तरक्की और सुरक्षा के संकल्प और अपनी ताकत का प्रदर्शन करते हुए त्यौहार मनाया गया। इस पूरे तंत्र के गणों ने सामूहिक रूप से गणंत्रत दिवस पर अपने क्रिया-कलाप करते हुए कौशल का प्रदर्शन किया और संदेश दिया कि दुनिया के सर्वश्रेष्ण गणतांत्रिक व्यवस्थाओं के इस देश में कई रंग मिलकर एक हैं।

सचमुच भारतीय गणतंत्र व्यवस्था में वह सब कुछ है, जो तरक्की के रास्तों को मीलों तक सीधे रखे हुए है। इतना होते हुए भी यह कहना है कि गणतंत्र के रास्ते पर कचरा मत करो। हमारे देश की व्यवस्था का तानाबाना सबको साथ लेकर चलने का है और देश की तरक्की के लिये हर किसी का त्याग भी जरूरी है। लेकिन जिस प्रकार से राजनीति के हथौड़े चल रहे हैं और वैमस्यता फैलाई जा रही है वह अशान्त करने वाली है। जिस देश में शौर्य, पराक्रम की सेना है, औद्योगिकी, कृषि, चिकित्सा, शिक्षा क्षेत्र के मनीषी हैं वहाँ ऐसे लोगों को अवसर कैसे मिल रहा है जो गणतंत्र के रास्ते पर कचरा सा हैं। इस प्रकार का कचना साफ होना चाहिये। भ्रष्टाचार, व्यभिचार, घोटाले के कई प्रकरण देश-प्रदेश में खुल चुके हैं। इन पर कठोर कार्रवाई के अलावा यह स्पष्ट होना चाहिये कि अमुक प्रकार के दोष में अमुक सजा तुरन्त मिलेगी। साथ ही हमारे राजनेता इतने साहसी और नैतिक हों कि अपनी गलती स्वीकारते हुए अपना कर्तव्य करें।

देश की आजादी और गणतंत्र का जश्न हर साल मनाया जाता रहेगा लेकिन इस मनाने के साथ ही अब उन निर्णयों को लेने की आवश्यकता है जो आधुनिक युग के लिये जरूरी हैं। गणतंत्र में पूरे देश की व्यवस्था का तंत्र है और इसका प्रत्येक व्यक्ति इसका गण। इसलिये पूरे तंत्र की हरियाली के लिये हर किसी को सजग-साफ-सुथरा रहना ही होगा।

बच्चों को इतना कमजोर मत बनाओ

अभी विगत दिवस एक युवा ने सेना में भर्ती न होने पर फांसी लगा ली। गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि विश्वविद्यालय पन्तनगर में अपने भाई के साथ रहकर फौज में भर्ती की तैयारी कर रहे देहरादून के त्यूनी तहसील के पास ऐठाण गाँव के मुकेश चौहान ने पंखे पर लटकर मौत का मुंह देखा। उसने सुसाइट नोट लिखा जिससे खुलासा हुआ।

इससे पहले अग्निवीर में चयनित न होने पर मौत को गले लगाने वाले युवक का मामला भी खूब वायरल हुआ था। इस प्रकार की और भी घटनाएं सुनने या देखने को मिल रही हैं।

यह सब हमारे समाज की कमजोरी है कि हमने अपने बच्चों को इतना कमजोर बना दिया है। हम अपने बच्चों को इतना भर नहीं समझा पा रहे हैं कि हमारा समाज है, हमारे संस्कार हैं, हमारा प्रदेश है और हमारा देश है। सबसे पहले इंसान बनना है। हम अपने परम्परागत घरेलू उद्यम से दूर हो रहे हैं, विपरीत स्थितियों में अपने आप पर काबू नहीं कर पा रहे हैं, जल्दबाजी इतनी है कि कोई सोचने-विचारने का मन ही नहीं है, नकल वह सब करने लगे हैं जिसकी कतई जरूरत नहीं है। यही सब कारण हैं कि हमारे बच्चे हर छोटी बात पर जल्दबाजी में निर्णय ले रहे हैं, जो घातक हैं।

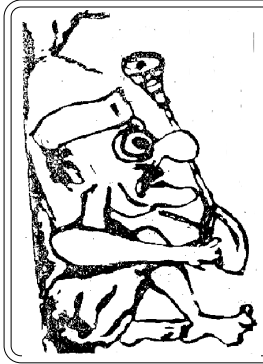

फसक

दाज्यू, कितना ही टालो, घोटाने होने वाले ठैरे

जोशीमठ में मचे हाहाकार के बाद भी नहीं चेत रहे हैं बल

दाज्यू, जोशीमठ में जमीन पर आई लम्बी ओर गहरी दरारों को देख हम सोच रहे हैं कि जब जगत जननी सीता माता भूमि में समायी होंगी तो जमीन में एक ही चीरा आया होगी। इस कलजुग में तो कोई हिसाब-किताब ही नहीं है। जमीन चाहे कितनी फट जाए, कोई सीता नहीं दिखाई दे रही है। न ही कोई राम मिल रहा है। मिलेंगे भी कै? चाहे जितना टालो, घोटाले होने वाले ठैरे।

दरोगा भर्ती में भी घोटाला निकला। एकदम 20 दरोगाओं को निलम्बित किया गया। जोड़-जन्तर में माहिर दरोगा हो गये बल। खाकी वर्दी और लट्ठ का रौब बहुत होने वाला ठैरा। कौन नहीं चाहेगा ऐसी बर्दी में उतरे और दरोगा बाबू कहलाए। जोशीमठ में असुरक्षित भवन ढहाए जा रहे हैं लेकिन दर्द तो होने ही वाला ठैरा। चाहे जैसे भी ईट-गारा फतोड़ा हो, टूटफूट बुरी लगती है। क्या करें? तुड़ान करना जरूर हो गया है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा कह रहे हैं- 'गुजरात मॉडल से नौ राज्यों के विधानसभा चुनाव जीतेंगे।' दाज्यू, मॉडल तो मॉडल ही होने वाला हुआ, वह चाहे गुजरात का हो या उत्तराखण्ड का।

हल्द्वानी जेल में बन्दी वर्चस्व की लड़ाई लड़ रहे हैं बल। यहाँ पहले भी ऐसा होता रहा है। जेल में बन्द कैदी आपस में घमाघम कर देने वाले ठैरे। आप जानने ही वाले हुए जो घूंसा जड़ दे वह जीतने वाला ठैरा। फिर जेल में तो तरह तरह के आते रहते हैं। जो अन्दर हैं, उनके बाहर भी होने वाले हुए। दाज्यू, क्या कहें क्या न कहें? पूरी दुनिया में वर्चस्व की ही तो लड़ाई है।

दाज्यू, हमरा गोपदा बहुत खुश है। कह रहा था- 'विधायक निधि में सवा चार कराड़ की बढ़ोत्तरी होने वाली है। गूल खड़ंजे और भवन निर्माण का कार्य भी निपटाना है। दाज्यू, गोपदा गजब का आदमी ठैरा। सरकार चाहे जिसकी हो, काम निपटाने में माहिर हुआ। डम्फर सम्फर सब हुआ उसके पास। चूं-चूं करने वाली गाड़ी में सवार होकर जब अपना गोपदा निकलता है तो पड़ोस वाले देखते रहते हैं। अब तो डीजीपे ने कह दिया है कि थाने महिला फ्रेंडली बनेंगे। हमें विश्वास हो गया है कि जल्द ही बदलाव होने वाला है। देश के पहलवानों पर आरोप लग रहे हैं, पुलिस व्यवस्था फिट होनी जरूरी है। डब्लूपीआर नाम का संगठन दावा कर रहा है कि भारत दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन चुका है। दाज्यू, हम गाते तो हैं- भारत भाग्य विधाता.....। कर लेने दो दुनिया वालों को सर्वे।

उत्तरकाशी के नौगांव की प्रभारी पशु चिकित्साधिकारी को बकरी पालने वालों से घूस लेते गिरफ्तार कर लिया बल। दाज्यू, कोई इंसानों के नाम पर ठग रहा है कोई जानवरों के नाम पर। नानकमत्ता में फिर से विदेश में नौकरी के नाम पर लाखों की ठगी हो गई। समझ नहीं आ रहा है कि विदेश में नौकरी के नाम पर रुपये-टके लगाने वाले पहले क्यों नहीं सोच-विचार करते होंगे। ठगों के हवाले होने के बाद डड़ाडाड़ मचती है। अब बताओ, नमकीन के पैकेट की आड़ में हरियाणा मार्का शराहब सप्लाई हो रही थी। हल्द्वानी में पुलिस ने सौ से अधिक पेटियों सहित तस्कर पकड़ा। दाज्यू, शराब के साथ नमकीन का मेल होने वाला ठैरा, तभी तो नमकीन का स्टीकर लगाकर शराब तस्करी हो रही होगी।

स्पा सेन्टरों में दबादब छापे पड़ रहे हैं। एसचटीयू की टीम ने हल्द्वानी में छापेमारी करते हुए खुलासा किया कि स्पा सेन्टरों में असम, नागालैण्ड, यूपी, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, हरियाणा सहित अन्य राज्यों की युवतियां मिली और स्थानीय भी लपेट में हैं। दाज्यू, स्पा सेन्टर में कौन-कौन राज्य से आए हैं यह उत्सुकता बहुतों को है। बेरोजगारी इतनी ज्यादा है कि लोग एक देश से दूसरे देश तक चले जा रहे हैं। क्या किया जाए? गरीब-गुर्दों की सोचो, बस दाग-धब्बे किसी में न लगें। सब इज्जत की दो रोटी खा लें। घुटने और जोड़ों का दर्द बहुतों को है और मालिश भी चाहते हैं। ये मालिश करने वाले कौन हैं, उन्हें क्या करना? हाँ, मसाला मिलाने वालों से सावधान रहना जरूरी है। बब्बू बता रहा था- '5 राज्यों की सस्ती शराब से उत्तराखण्ड पर दबाव बढ़ चुका है। पर्यटक अपने साथ ही शराब ले आते हैं। सरकार नई नीति पर विचार करेगी।' दाज्यू, शराब को लेकर सोचना बहुत जरूरी है। सस्ती हो या महंगी, इसके मतवाले बहुत हैं।

दाज्यू, यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश उत्तराखण्ड आकर कह गए- 'मुनाफा कमाने के लिए पर्यावरणीय व्यवथाओं को दरकिनार कर पहाड़ के लोगों की जान जोखिम में डाल रही है सरकार।' दाज्यू, अखिलेश भी अपने बाबू मुलायम की तरह उत्तराखण्ड का प्रेम बनाए हुए हैं। दाज्यू, उधर उत्तराखण्ड मुक्त विश्व विद्यालय द्वारा जारी डिप्लोमा को मान्यता दिलाने तथा अशोक लेलेंड कम्पनी में स्थाई नियुक्ति देने की मांग को लेकर युवा नंगे पांव गोलज्यू मन्दिर तक नारे लगाते हुए पहुँच गये। दाज्यू, फाल्गुन सामने है दो-चार होली गाते हैं। मन लगा रहेगा।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

पर्यावरण.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

असंख्य पवित्र नदियां निकली हैं। ऐसे परम पवित्र, पावन रमणीय हरे-भरे प्रदेश का पर्यावरणविद् के सतत विरोध के बावजूद बिजली बनाने और पर्यटन के लिये वर्तमान बीजेपी सरकार सहित सभी पूर्ववर्ती सरकारों ने खूब दोहन किया ठै। इस कारण केदारनाथ त्रासदी जैसी घटनाएं घटित हो चुकी हैं, और आगे भी भयावह विनाश की खबरें आएंगे क्योंकि जब देवताओं की निवास स्थली देवभूमि हिमालय भी पर्यटन के नाम पर अंडा, मांस, मदिरा का व्यापक प्रयोग और न जाने कैसे-कैसे अपराध मनुष्य करेगा तो देवता तो रुष्ट होंगे ही। हर वर्ष गर्मियों में उत्तराखण्ड दर्शन और सैरसपाटे के लिये घुमक्कड़ों की भीड़ इस इस कदर होती है कि पहाड़ों में गाड़ियों का कई किमी तक लम्बा जाम लग जाता है। पर्यटकों के कारण यहाँ का पारिस्थितिकी तंत्र चरमरा गया है। इस शहर और गाँव में बढ़ती भीड़ के लिये होटल और गेस्ट हाउसों की बाढ़ आई हुई है। प्रश्न ह`कि मैदानों की बिजली की मांग तो निरन्त बढ़ती जाएगी तो इसका खामियाजा पहाड़ क्यों भरें? सरकारों को अन्य विकल्प तलाशने होंगे। क्यों न यहाँ भी बढ़ती भीड़ के लिए कश्मीर घाटी के पवित्र अमरनाथ धाम के दर्शन की ही तरह दर्शनार्थियों को सीमित मात्रा में परमिट देने का सिस्टम विकसित किया जाए?

इस विषय में सबसे खास बात यह है कि सरकार समूचे हिमालय क्षेत्र के विकास के लिए खास दीर्घकालीन योजना बनाई जा जिसमें देश के जाने-माने पर्यावरणविद्, इंजीनियरों और वैज्ञानिकों के अनुभवों और सलाहों को खास तवज्जो दी जाए। तभी हिमालय का पारिस्थितिकी तन्त्र सम्भलेगा वरना तो केदारनाथ त्रासदी और अभी हाल की जोशीमठ जैसी घटनाएं निरन्तर और विकराल रूप में आएंगी ही आएंगी। दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त प्रोफेसर और वर्तमान में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के एमिरेट्स साईंटिस्ट प्रो. धीरज मोहन बनर्जी के अनुसार, कई साल पहले भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने एक जाँच की थी। वह रिपोर्ट भी बोलती है कि यह क्षेत्र कितना अस्थिर है। भले ही सरकार ने वैज्ञानिकों या शिक्षाविदों को गम्भीरता से नहीं लिया, कम से कम उसे भारतीय भूवैज्ञानि सर्वेक्षण की रिपोर्ट पर तो ध्यान देना ही चाहिये था। इस क्षेत्र में बेतरतीब विकास के नाम पर हो रहे सभी निर्माण कार्यों पर रोक लगनी चाहिये।

चिन्ता की बात यह है कि सरकार चाहे यूपीए की हो या एनडीए की वो कभी पर्यावरणविदों की सलाह को महत्व नहीं देती। पर्यावरण के नाम पर मंत्रालय, एजजीटी ओर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सब कागजी खानापूरी करने के लिये हैं। कॉरपोरेट घरानों के प्रभाव में और उनकी हवस को पूरा करने के लिये सारे नियम और कानून ताक पर रख दिये जाते हैं। पहाड़ हों, जंगल हों, नदी हो या समुद्र तटीय प्रदेश, हर ओर विनाश का यह ताण्डव जारी है। नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा शुरु किया गया उत्तराखण्ड के चार धाम को जोड़ने वाली सड़कों का प्रस्तावित चौड़ीकरण भविष्य में इससे भी भयंकर त्रासदी लाएगा। पर क्या कोई सुनेगा? देवताओं के कोप से बचने वाले खुद देवता ही हैं। वो, हमारी साधना से खुश होकर हमें बहुत कुछ देते भी हैं, और कुपित होकर बहुत कुछ ले भी लेते हैं। संदीप जी जैसे भक्तों, प्रोफेसर बनर्जी जैसे वैज्ञानिकों, भौगोलिक विशेषज्ञों और सारे जोशीमठ वासियों की पीड़ा हम हम सबकी पीड़ा ठै। इसलिए ऐसे संकट में सभी को एकजुट होकर समस्या का हल निकालना चाहिये।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आपके पत्र

विकासखण्ड मुख्यालय से ग्रामीण क्षेत्रों का मिलना एक दिवास्वप्न

नन्दाबल्लभ पाण्डे

हमारे पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड में कुल 95 विकास खण्ड हैं। बहुत ही कम विकासखण्ड ऐसे हैं जिनके मुख्यालय गाँवों से सड़क मार्ग बहुत कम जुड़ पाये हैं। अधिकांश गाँव विकास खण्ड मुख्यालय से पैदल मार्ग द्वारा जुड़े हुए हैं। जबकि ग्रामवासियों का विकास खण्ड कार्यालयों से कई प्रयोजनों के लिये सम्पर्क बनाये रखना होता है। कुछ गाँव अपवाद स्वरूप विकासखण्ड मुख्यालयों से सिंगल लेन की सड़कों से जुड़ पाये हैं। इन्हीं सड़कों द्वारा ग्रामीण इलाकों का विकासखण्ड मुख्यालयों से सम्पर्क हो पाता है। वह भी कोई विरले भाग्यशाली गाँव वालों के लिये विकास खण्ड मुख्यालय से सम्पर्क हो पाता है। यह सब भी प्रदेश के मैदानी जिले के गाँव ही सड़क मार्गों से जुड़ पाते हैं। यहाँ कहीं पहाड़ी इलाकों में सड़क मार्ग बन पाये हैं उनकी दशा इतनी दयनीय है कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता है। जब तक पहाड़ी ग्रामीण क्षेत्रों का विकास खण्ड मुख्यालयों का सड़क यातायात से जुड़ाव नहीं होगा तब तक ग्रामीण क्षेत्रों का सही अर्थों में विकास कार्य का होना सम्भव नहीं हो सकता चाहे सरकारी तन्त्र कितनी ही डींगें हाकती रहें।

अब उत्तराखण्ड सरकार विकास खण्ड मुख्यालयों को जाने वाली ग्रामीण सड़कों को सिंगल लेन की डबल लेन में विकसित करने की बात कह रही है। मगर जब ग्रामीण क्षेत्रों की विकास खण्ड मुख्यालय तक जोड़ने वाली सड़कें बनी ही नहीं हैं तो सिंगल मार्ग से आने की बात एक कोरी कल्पना मात्र है। हाँ कागजी लीपापोती मात्र जरूर हो सकती है। सड़कों का सुधार जमीनी स्तर में आने की बात दिवा स्वप्न ही है। उत्तराखण्ड राज्य का विकास मन्थर गति से चल रहा है। वर्तमान में जो भी सड़क मार्ग बने हुए हैं सबकी दशा दयनीय है। इन पर वाहन चलाना बड़ी समस्या बनी हुई है। जिन इलाकों में सड़कें बनी ही नहीं हैं अथवा आधी अधूरी हैं, वहाँ चौड़ीकरण की बात करना डींगे मारने के समान है। उदाहरण के लिये नैनीताल जनपद में विकासखण्ड भीमताल से उचोलीकोट गाँव अभी तक नहीं जुड़ पाया है। अन्य इलाकों की इससे भी बदतर स्थिति है। ऐसे में अन्य पिछड़े इलाकों की स्थिति का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। उत्तराखण्ड सरकार तन्त्र के जन नेता व जनप्रतिनिधियों का समय-समय पर गाँवों के विकास की बात करना एक उपहास मात्र ही लग रहा है। (ज्योलीकोट, नैनीताल)

'नैनीताल बचाओ' अभियान की धीमी गति, ऊपर से असहयोग

उमेश चन्द्र पाण्डे

सम्पादक महोदय, आपके पत्र के माध्यम से नैनीताल की जनता व प्रशासन का ध्यान नैनीताल के अस्तित्व को बचाने के लिये 'नैनीताल बचाओ' की तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ। वर्षों से चले आ रहे इस अभियान की धीमी गति व प्रशासन के असहयोग से जनता व इस अभियान के संचालकों में निराशा घर कर चुकी है। आन्दोलन के शुरू होने के बाद भी निजी स्वार्थ के कारण बाहरी लोगों के घुसपैठ व प्रशासन की अनदेखी से आज नैनीताल कंक्रीट के जंगल में बदल चुका है निर्माण कार्य अभी भी बदस्तूर चल रहा है बहुमंजलीय भवन बन रहे हैं।

अभी जोशीमठ की घटना से एक बार फिर नैनीताल की तरफ ध्यान खिंच गया, आज जो हश्र जोशीमठ का हुआ है वह विकास के नाम पर मानव निर्मित आपदा है, बहुमंजलीय इमारतें, धरती का दोहन, ऑलवैदर रोड के लिये भारी मशीनों से पहाड़ों का कटान, जलविद्युत परियोजनाएँ आदि से जोशीमठ का पहाड़ फट पड़ा ।

नैनीताल में भी वही सब हो रहा है जो जोशीमठ में हो रहा था भू वैज्ञानिकों के हिसाब से बिरला स्कूल वाला पहाड़ बहुत कच्चा व सम्वेदनशील है लाइम रॉक होने के कारण इसकी भार क्षमता कम है और प्रशासन को इस बात से पूर्व में अवगत भी करा दिया गया है इसके बावजूद इसकी अनदेखी कर यहाँ बड़ी तेजी से भवन निर्माण हो रहे हैं अभी कुछ वर्ष पूर्व लोवर माल रोड का धँसाव हुवा जो संकेत दे रहा कि नैनीताल वालो संभल जाओ खतरे की घंटी बज चुकी है।

अगर अभी सचेत नहीं हुए, नैनीताल को बचाने के लिये संघर्ष नहीं कर पाये तो परिणाम भयावह होंगे। पूरा पहाड़ झील में समा जायेगा फिर ना झील रहेगी ना मकान रहेंगे, ना पहाड़ रहेगा और ना ही रहेगा 'नैनीताल'।

(जगदम्बा नगर, हल्द्वानी)

ज्योतिष की बातें - 113

इस 3 फरवरी 2023 को शनि कुम्भ राशि में गोचररत पश्चिम दिशा में अस्त हो जाएगा। 35 दिन अस्त रह कर पूर्व दिशा में पुनः उदय होगा। शनि के अस्त होने से अगले 35 दिन शनि से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में कमी आ जाएगी। साथ ही जिन जातकों को शनि कष्टदायक है उनके लिए कष्ट में भी कमी सम्भव होगी। जया एकादशी- बुधवार 1 फरवरी 2023 को जया एकादशी का व्रत किया जाएगा। माघ पूर्णिमा- रविवार 5 फरवरी 2023 को माघ पूर्णिमा का पर्व होगा। पूरे माघ के महीने तीर्थराज प्रयाग में अथवा अन्य किसी पवित्र नदी में प्रातः प्रतिदिन स्नान करने का निर्देश शास्त्रों में मिलता है। यदि महीने भर स्नान न किया जा सके तो अशक्तावस्था में 3 दिन अवश्य ही स्नान करना चाहिए। यदि 3 दिन भी गंगा स्नान न कर सकें तो कम से कम माघ पूर्णिमा के दिन अवश्य ही गंगा स्नान करना चाहिए। ऐसा शास्त्रों में वर्णन है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 4

सफाई अभियान और कचरा

सफाई करने से कचरा समाप्त हो जाता है क्या? ऐसा नहीं है। पहले घर के अन्दर का कचरा घर के बाहर जाता है। फिर सभी घरों का वह कचरा गली के कोने में इकट्ठा होता है। तत्पश्चात् सभी गलियों का वह कचरा मोहल्ले के किसी एक स्थान पर एकत्र कर दिया जाता है। फिर सभी मोहल्लों का वह कचरा एकत्र करके शहर के बाहर किसी स्थान पर रख दिया जाता है। फिर जब वहाँ पर गन्दगी बहुत हो जाती है तो कई गाँवों शहरों का कचरा एक साथ उठाकर किसी निर्जन स्थान पर फेंक दिया जाता है। इस प्रकार उस स्थान पर कचरे का बहुत बड़ा ढेर बनने पर चारों तरफ बदबू फैलने लगती है। कानपुर दिल्ली जैसे महानगरों में तो कचरे के कई किलोमीटर लम्बे चौड़े विशालकाय पहाड़ कुतुबमीनार की ऊँचाई को टक्कर दे रहे हैं। फिर उन गन्दगी के पहाड़ों से कई किलोमीटर दूर तक इतनी बदबू फैलती है कि मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी भी उसके आसपास से विचरण नहीं कर सकते। इस तरह से सफाई के नाम पर कचरे का स्थानान्तरण ही होता है, कचरे का समापन नहीं ।

इस समस्या के मूल कारण पर कभी किसी ने आज तक विचार नहीं किया। इसका मूल कारण है 'यूज एंड थ्रो नाम की संस्कृति'। इस विकृति को यदि समाप्त कर दिया जाए तो कचरा पूरे देश से आधा कचरा लगभग समाप्त हो जाएगा। हमें ऐसी किसी भी वस्तु का निर्माण नहीं करना चाहिए जिसका उपयोग केवल एक बार ही होता हो फिर चाहे वह प्लास्टिक की थैली हो या इंजेक्शन लगाने वाली सुई। इसके साथ ही पैकेजिंग इंडस्ट्री को भी हतोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि अधिकांश कचरा पैकेजिंग मैटीरियल का ही दिखाई पड़ता है। इन दो उपायों के बाद भी यदि कहीं गन्दगी दिखाई पड़ेगी तो वह वास्तव में खेतों में डालने लायक खाद के रूप में ही होगी ।

-सरल

जोशीमठ

पूर्व विधायक संगठन के सम्मेलन में पक्ष-विपक्ष हुआ

जोशीमठ में हुए भू-धंसाव के बाद से सबका ध्यान इस ओर है। इसी क्रम में पूर्व विधायक संगठन के सम्मेलन में पक्ष-विपक्ष हो गया। सम्मेलन में पेपर लीक प्रकरण और जोशीमठ आपदा समेत अन्य मुद्दों पर सरकार को कोसा गया। इस पर भाजपा के पूर्व विधायक राजेश शुक्ला ने आपत्ति जताई। विस अध्यक्ष ऋतु खण्डूरी व सीएम धामी ने सम्मेलन से दूरी बनाए रखी। विधानसभा सभागार में हुए संगठन के पहले सम्मेलन में सभी दलों के पूर्व विधायकों ने भाग लिया। इसमें यूकेडी नेता काशी सिंह ऐरी ने भर्तियों का मामला उठाया। पूर्व सीएम हरदा ने सम्मेलन को अच्छी पहल बताया।

पैकेज देंगे : शाह

सीएम पुष्कर धामी ने केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह को जोशीमठ भू-धंसाव की विस्तृत जानकारी देते हुए केन्द्रीय सहायता देने का आग्रह किया। इस पर श्री शाह ने जोशीमठ बचाने और प्रभावितों को मदद देने के लिये विशेष पैकेज देने का आश्वासन दिया।

पुनरावृत्ति न हो

भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व डीडीहाट के विधायक विशन सिंह चुफाल ने कहा है कि प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र में जोशीमठ जैसी घटना की पुनरावृत्ति न हो, इसे लेकर प्रदेश सरकार प्राथमिकता से कार्य कर रही है। जोशीमठ आपदा पर अन्य दल राजनीति की बजाय इस समय सरकार का सहयोग करें।

जाँच होगी

कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने केन्द्रीय गृह मंत्री व रक्षा मंत्री को पत्र भेजकर जोशीमठ में सेना और आईटीबीपी के कैम्प में सीवरेज सिस्टम बनाने का आग्रह किया है। साथ ही कहा कि जोशीमठ शहर में बहुमंजिला भवन निर्माण की अनुमति कैसे मिली, इसकी जाँच कराई जाएगी।

रिपोर्ट का इन्तजार

जोशीमठ का भविष्य राष्ट्रीय आपदा प्रबन्ध न प्राधिकरण (एनडीएमए) की रिर्पो से तय होगा। राज्य सरकार प्राधिकरण की रिपोर्ट के आधार पर जोशीमठ के भावी स्वरूप के लिये योजना तैयार करेगी। यहाँ जीएसआई, आईआईटी रुड़की, वाडिया संस्थान, सीबीआरआई, भू-भौतिकीय अनुशंधान संस्थान, एनआरआई हैदराबाद, एनआईएच जाँच में जुटे हुए हैं।

मलबा डम्पिंग जोन

भू-धंसाव के कारण असुरक्षित भवनों के डिस्मेंटल का मलबा जोशीमठ शहर से करीब दो किमी दूर सलूड़ और सेलंग नामक स्थान पर डम्प किया जा रहा है। ये डम्पिंग जोन सीमा सड़क संगठन की ओर से बद्रीनाथ हाईवे पर चयनित किये गये हैं। होटलों के सरिया, टिन, लोहे के एंगल आदि सामग्री भवन स्वामी सुरक्षित स्थानों पर ले जा रहे हैं। अन्य मलबा डम्पिंग जोन में जाना है।

हेलंग बाईपास?

सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हेलंग मारवाड़ी बाईपास बनेगा या नहीं, यह आईआईटी रुड़की की रिपोर्ट के बाद तय किया जाएगा। सेना की जरूरतों और बदरीनाथ यात्रा को देखते हुए सरकार इस बाईपास पर जल्द कार्य शुरु करवाना चाहती है परन्तु जोशीमठ भू-धंसाव के बाद अब हर स्थितियों को जाँच लेना जरूरी है। बताया जा रहा है कि बीआरओ बाईपास के काम को आगे बढ़ाने के लिये तकनीकी रिपोर्ट का इन्तजार कर रहा है।

ज्योतिर्मठ विस्थापित

जोशीमठ के अस्तित्व को लेकर कई तरह के सवाल हो रहे हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि ज्योतिर्मठ को विस्थापित करना पड़ेगा। वैज्ञानिकों की जाँच और रिपोर्ट के बाद कई निर्णय लिये जाने हैं। इन्हीं में से ज्योतिर्मठ विस्थापित करने का सवाल भी प्रमुख है।

भूकम्प ने डराया

भू-धंसाव के कारणों से जूझ रहे जोशीमठ को भूकम्प के झटकों ने भी बहुत डरा दिया है। विगत दिवस चीन, नेपाल सहित भारत में आए भूकम्प के झटके से उत्तराखण्ड की धरती भी हिली थी। संकट में घिरे जोशीमठ के लोग इससे और भी भयभीत हो गये। इसके अलावा मौसम और भूकम्प के हल्के झटके भी यहाँ स्थिति और खराब कर सकते हैं इसके लिये अलर्ट रहना होगा।

बिजलीघर भी शिफ्ट

जोशीमठ में भू-धंसाव के कारण खतरे की जद में आद मारवाड़ी स्थित बिजली घर को सेलंग में शिफ्ट किया जायेगा। इसके लिये ऊर्जा निगम ने जमीन तलाश शुरु कर दी है। इस कार्य में 22 करोड़ रुपये का खर्च आएगा, जिसका प्रस्ताव शासन को भेज दिया गया है। निगम के अधिकारी बता रहे हैं कि सेलंग में भूमि तलाश ली गई है।

राजनीति न करो

भाजपा ने विपक्ष पर ओछी राजनीति का आरोप लगाते हुए कहा है कि जोशीमठ आपदा पर राजनीति न की जाए बल्कि संकट में फंसे लोगों की सहायता के लिये आए आएं।

विपक्ष सक्रिय

जोशीमठ मामले को लेकर विपक्ष सक्रिय है और कांग्रेस व अन्य पार्टियों के नेता अपनी ओर से दौरा व निरीक्षण कर रहे हैं। बताया गया है कि अब कांग्रेस के राहुल गांधी भी आने वाले हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बोकांग बालिंग जलविद्युत परियोजना का विरोध

धारचूला। सीमान्त क्षेत्र के बोकांग बालिंग जलविद्युत परियोजना का पहले से हो रहा विरोध अब जोशीमठ की घटना के बाद और भी तेज हो चुका है। दारमा घाटी में प्रस्तावित जल विद्युत परियोजना का दारमा संघर्ष समिति के लोगों ने घाटी बगड़ के खेल मैदान में प्रदर्शन कर ऐलान किया कि वह प्रकृति के साथ किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ को सहन नहीं करेंगे। ग्राम पंचायत घाटीबगड़ में एकत्रित ग्रामीणों ने कहा कि सीमान्त के लोगों को विनाश के आधार पर विकास नहीं चाहिये। संघर्ष समिति के अध्यक्ष पूरन सिंह ग्वाल ने कहा कि दारमा घाटी के कई गाँव पहले से ही आपदा की मार झेल रहे हैं ऐसे में टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कारपोरेशन लि. की ओर से बोकांग बालिंग जल विद्युत परियोजना के बनने से घाटी में आपदा का खतरा और भी बढ़ जायेगा। जोशीमठ के हालात देखते हुए सरकार को समय रहते ऐसी परियोजनाओं को बन्द करना चाहिये। क्षेत्रवासियों ने ऐलान कर दिया है कि दारमा के ढाकर गाँव में बनी 15 मीटर टनल के कार्य को माइग्रेशन में जाने के बाद रोका जायेगा। अब हर सूरत इस परियोजना को रोका जायेगा। ग्रामीणों को आशंका है कि जिस परियोजना से राज्य को 165 मेगावाट बिजली मिलने की बात कही जा रही है उससे सीमान्त में नुकसान अधिक होगा। आपदा की स्थिति में तिदांग, ढोकर, गो, बौन, फिलम आदि गाँव प्रभावित हो सकते हैं। विरोध प्रदर्शन करने वालों में मनोज ग्वाल, अमर बनग्याल, धीरा ग्वाल, इन्द्र ग्वाल, मनोज नगन्याल, दिनेश चलाल, भजन ग्वाल, विक्रम ग्वाल सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण थे। दूसरी ओर विधायक ने सीमान्त बचाने के लिये गांधीगिरी आन्दोलन शुरु कर दिया है।

दारमा घाटी में प्रस्तावित जलविद्युत परियोजना का ग्रामीणों द्वारा विरोध प्रदर्शन

बेरीनाग स्वास्थ्य सुविधाओं के लिये आज भी बंचित

बेरीनाग। सुरम्य नगरी बेरीनाग स्वास्थ्य सुविधाओं के मामले में पिछड़ रही है। ऐसे में क्षेत्रवासियों में रोष है। यहाँ पर प्राथमिक स्वास्थ्रू केन्द्र (पीएचसी) को उच्चीकृत कर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र (सीएचसी) का दर्जा मिले आठ साल हो चुके हैं लेकिन सुविधाओं के अभाव में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

बताते चलें कि पचास हजार से अधिक आबादी वाले बेरीनाग के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में रेडियोलॉजिस्ट बाल रोग विशेषज्ञ, महिला रोग विशेषज्ञ, सर्जन, पैथोलॉजिस्ट के पद रिक्त पड़े हैं। आठ साल पूर्व कांग्रेस सरकार ने पीएचसी को सीएचसी बनाने की घोषणा की थी। घोषणा के बाद स्वास्थ्य विभाग ने 23 जून 2015 को इसकी अधिसूचना भी जारी कर दी थी। जिसमें डॉक्टरों समेत दस पदों को स्वीकृत दी गई। इसका आदेश स्वास्थ्य केन्द्र को भी हुआ। पीएचसी को सीएचसी तो बना दिया गया लेकिन अस्पताल में आज तक सुविधाएं नहीं हैं। इसमें न तो विशेषज्ञ डॉक्टरों की नियुक्ति हुई और न ही उपकरण व अन्य सामाग्री की उपलब्धता है। सीएचसी में थल, वर्षायत से लेकर दूरस्थ लोहाथल, कोटमन्या, संगौड़, अराड़ी, चौकोड़ी, काण्डेकिरोली, चौड़मन्या, बोरा आगर, बांसपटान के अलावा काण्डा, बागेश्वर, कपकोट, थल क्षेत्र के कई गाँवों के लोग उपनचार के लिये आते हैं लेकिन यहाँ सुविधा न होने के कारण मरीजों को जिला मुख्यालय या हल्द्वानी जाना पड़ता है। ऐसे में क्षेत्रवासियों ने फिर से सीएचसी में डाक्टर व अन्य संसाधनों की मांग उठाई है। सामाजिक कार्यकर्ता प्रकाश बोरा ने मांग की है कि विशेषज्ञ डाक्टरों को तैनात किया जाए ताकि दूरस्थ क्षेत्र के लोगों को चिकित्सा के लिये भटकना न पड़े।

क्षेत्र में सीएचसी तो बना दिया गया है लेकिन सुविधाओं के अभाव में दिक्कत हैं

ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना में ११३ किमी की अलग-अलग सुरंगों का निर्माण कार्य

वर्ष 2023 बहुत खास है क्योंकि इसमें ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना का निर्माण होगा। बताया जा रहा है कि इस परियोजना ने विगत वर्ष में कई कार्य कर डाले हैं जिसमें चार रेल सुरंगों को आरपार कर रेल विकास निगम ने सफलता प्राप्त की। इस वर्ष रेल विकास निगम ने करीब 20 स्थानों पर सुरंग आरपार करने का लक्ष्य बना रखा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का इस ओर पूरा ध्यान है। परियोजना में 16216 करोड़ की लागत से अब तक 10748. 29 करोड़ रुपये खर्च हो चुका है। पूरी परियोजना को देखा जाए तो अब तक करीब 33 प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है।

ऋषिकेश से कर्णप्रयाग तक 125 किमी लम्बी इस परियोजना में 104 किमी रेल लाइन 17 सुरंगों से होकर गुजरेगी। इन सुरगों के अलावा परियोजना पर 12 निकास सुरंगों के अलावा एडिट और क्रास पैसेज भी हैं, जिन्हें मिलाकर सुरंगों की कुल लम्बाई 213 किमी है। हिमालयी क्षेत्र में बन रही इस परियोजना में सुरंगों की खुदाई में सबसे अधिक चुनौती है। इसके लिये रेल विकास निगम तेजी से जुटा हुआ है। परियोजना में सावधानी के साथ सुरंग कार्य के लिये विशेषज्ञ जुटे हुए हैं। सुरंगों का कार्य तेजी से हो इसके लिये इसके अधिकारी विशेष निगरानी रखे हुए हैं। कर्णप्रयाग रेल परियोजना पर अब तक सभी सुरंगों में कुल 86 किमी की खुदाई पूरी हो चुकी है। रेल विकास निगम ने इन संरुगों की खुदाई के लिये कुल 44 फेज पर काम शुरु किया था, जिसमें से चार फेज में कार्य पूरा हो चुका है। वर्तमान में 40 फेज में सुरंगों की खुदाई का कार्य जारी है। निगम का दावा है कि इस वर्ष 2023 में करीब 20 सुरंगें तैयार हो जाएंगी।

परिक्रमा

चारधाम मार्ग में चार्जिंग स्टेशन स्थापित होंगे

प्रदेश सरकार इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिये कदम बढ़ा रही है। इस क्रम में चारधाम मार्ग पर चार्जिंग स्टेशनों की तैयारी है। हर तीस किलोमीटर पर एक स्टेशन होगा ताकि सुविधा वाहनों के लिये सुविधा हो सके।

प्रदेश में इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन स्थापित किये जाने के लिये सर्वे हुआ है। बताया जा रहा है कि इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग के लिये विभाग ने विशेष रूप से चारधाम यात्रा मार्ग के दस हिस्सों का सर्वे पूरा कर लिया है। इस यात्रा मार्ग पर हर तीस किमी पर एक चार्जिंग स्टेशन लगाने की तैयारी है। शेष्ज जगह में 50 से 60 किलोमीटर के दायरे में एक चार्जिंग स्टेशन स्थापित किया जायेगा।

प्रदेश में इलेक्ट्रिक वाहनों का बाजार बढ़ने लगा है। इनकी संख्याा में बढ़ोत्तरी हुई है। वाहनों की चार्जिंग के लिये देहरादून, हरिद्वार, ऋषिकेश, उधम सिंह नगर आदि स्थानों पर चार्जिंग स्टेशन स्थापित होने शुरु हो गए हैं। प्रदेश में अभी 25 हजार से अधिक इलेक्ट्रिक वाहन संचालित हो रहे हैं। इनमें से करीब 20 हजार ई-रिक्शा और शेष अन्य वाहन हैं। इन वाहनों के सुचारू संचालन के लिये ई-वाहन नीति बनाई जा रही है। जिसमें इलेक्ट्रिक वाहनों को बनाने वाली कम्पनियों के साथ ही चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिये मानक तय किये जाएंगे। इनमें छूट दी जानी भी प्रस्तावित है। प्रतिवर्ष अप्रैल-मई में शुरु होने वाली चारधाम यात्रा को देखते हुए परिवहन विभाग तैयारी में जुट चुका है। आने वाले यात्रियों व श्रद्धालुओं की सुविधा को देखते हुए यात्रा मार्ग पर इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन स्थापित कराने की दिशा में कार्य शुरु कर दिया गया है क्योंकि इलेक्ट्रिक वाहनों के लिये यह बेहद जरूरी है।

इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिये हर तीस किमी पर इस प्रकार के स्टेशन स्थापित होने जा रहे हैं

विश्वभारती केन्द्रीय विवि का पहला परिसर गीतांजलि

नैनीताल। विश्वभारती केन्द्रीय विश्व विद्यालय का पहला परिसर बनने का गौरव रामगढ़ को मिलने जा रहा है। शासन ने परिसर के लिये उद्यान विभाग की 44.46 हेक्टेयर भूमि विश्वभारती को निःशुल्क हस्तान्तरित कर दी है। सत्र 2023-24 से यहाँ शिक्षण और शोध कार्य होने लगेगा।

शान्ति निकेतन ट्रस्ट के सदस्य सचिव प्रो. अतुल जोशी का कहना है कि अब टैगोर टाप में स्थित विश्व भारती विवि के गीतांजलि परिसर में अगले सत्र से शिक्षण कार्य होगा। प्रो. जोशी ने कहा कि उत्तराखण्ड राज्य को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दी इ सौगात से यहाँ विश्वभारती केन्द्रीय विश्वविद्यालय का गीतांजलि परिसर देशी-विदेशी पर्यटकों, छात्रों एवं शोधार्थियों के लिये प्रमुख केन्द्र बनेगा। इसके माध्यम से स्थानीय युवओं के लिये स्वरोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

उल्लेखनीय है कि 7 मई 2022 को सीएम ने विश्वभारती के परिसर के लिये भूमि पूजन किया था। शान्ति निकेतन ट्रस्ट फॉर हिमालया 2016 से परिसर के लिये प्रयास कर रहा है। वर्ष 1990 में विश्वभारती ने रामगढ़गढ़ में परिसर बनाने का निर्णय लिया। इस पूरी प्रक्रिया में प्रतिवर्ष गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर की जयन्ती भी धूमधाम से मनाई जा रही है।

अब जबकि कार्य को अंजाम मिलने जा रहा है, क्षेत्रवासियों में उत्साह है। यह भी बतातें चलें कि भीमताल के विधायक राम सिंह कैड़ा ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और उद्यान मंत्री गणेश जोशी से भेंट कर रामगढ़ ब्लाक के मल्ला रामगढ़ स्थित टैगोर टॉप में स्थित भूमि विश्वभारती के केन्द्रीय विश्वविद्यालय के नाम हस्तान्तरित करने की मांग की थी। श्री कैड़ा ने सीएम और उद्यान मंत्री का आभार प्रकट किया है।

वाकेई रामगढ़ में केन्द्रीय विवि का बनना बड़ी उपलब्धि होगा। इससे क्षेत्र में नई शुरुआत होगी।

रामगढ़ में ४४.४६ हेक्टेयर भूमि आवंटित। अगले शिक्षा सत्र से शिक्षण व शोध कार्य

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड शासन | आज़ादी का अमृत महोत्सव | G20

एक ही लक्ष्य - एक ही सपना
सर्वश्रेष्ठ बने उत्तराखण्ड अपना

26 जनवरी

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

संकल्प नये उत्तराखण्ड का

- प्रधानमंत्री जी के विज़न के अनुरुप श्री केदारनाथ व श्री बदरीनाथ धाम का पुनर्निर्माण व पुनर्विकास। इस बार की चारधाम यात्रा में रिकार्ड 45 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने दर्शन किये।
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अन्तर्गत प्रदेश के लगभग 9 लाख 38 हजार किसानों के खातों में लगभग 1767 करोड़ रुपये की राशि हस्तान्तरित की जा चुकी है।
- किसानों को तीन लाख रुपए और महिला स्वयं सहायता समूहों को बिना ब्याज के पांच लाख रुपए तक का ऋण।
- केंद्र सरकार से पौंटा साहिब-देहरादून, बनबसा-कंचनपुर, भानियावाला-ऋषिकेश, काठगोदाम-लालकुंआ-हल्द्वानी बाईपास और रुद्रपुर बाईपास परियोजनाओं की महत्वपूर्ण सौगात।
- ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना पर तेज़ी से कार्य गतिमान, टनकपुर-बागेश्वर और डोईवाला से गंगोत्री-यमुनोत्री रेललाइन के सर्वे पर सहमति।
- पर्वतीय क्षेत्रों में रोप-वे हेतु पर्वतमाला परियोजना, प्रधानमंत्री जी द्वारा गौरीकुण्ड-केदारनाथ और गोविंदघाट-हेमकुण्ड साहिब रोप-वे का शिलान्यास।
- अटल आयुष्मान उत्तराखण्ड योजना में सभी परिवारों को 5 लाख रुपये वार्षिक तक के निःशुल्क ईलाज की सुविधा।
- सरकारी नौकरियों में महिलाओं को मिलेगा 30% क्षैतिज आरक्षण।
- मुख्यमंत्री वात्सल्य योजनाः कोविड के कारण अनाथ बच्चों की देखभाल राज्य सरकार द्वारा।
- होम-स्टे योजना व वोकल फॉर लोकल के लिये एक जनपद दो उत्पाद योजना से अर्थव्यवस्था को मजबूती।
- समान नागरिक संहिता की ओर बढ़ते कदम।
- जबरन धर्मान्तिरण पर आया सख्त कानून।
- मानसखण्ड मन्दिर माला मिशन से पौराणिक मन्दिरों का संरक्षण एवं पुनर्विकास।
- मुख्यमंत्री आंचल अमृत योजना में आंगनबाड़ी केन्द्रों के 2 लाख 13 हजार से ज्यादा बच्चों को भोजन के साथ फर्टिफाइड विटामिन A और D युक्त दूध दिया जा रहा है।
- निर्धन परिवारों को साल में 3 गैस सिलेण्डर मुफ्त।
- स्कूल और कॉलेज के बच्चों को मोबाइल टेबलेट दिये गये, सरकारी स्कूल के बच्चों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें।
- मण्डुवा को बढ़ावा, केन्द्र से मिली मण्डुवा प्रोक्योरमेंट की मंजूरी।
- ईज़ आफ डूइंग बिजनेस में अग्रणी, स्टार्ट-अप में अचीवर्स श्रेणी में शामिल।

सरलीकरण, समाधान, निस्तारीकरण एवं संतुष्टि – उत्तराखण्ड सरकार का मूलमंत्र

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी
www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रं समाज का का सराहनीय निर्णय

शादी में शराब बन्द, पूर्वजों की परम्परा को संजोएंगे

पि.हि.प्रतिनिधि

धारचूला। रं समाज ने जनजातीय परम्पराओं को संरक्षित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए तय किया है कि शादी-विवाह में शराब का चलन नहीं होगा। साथ ही सगाई में दूल्हे की ओर से वधू पक्ष को एक-एक म्पये और मिठाई स्वरूप टाफियां दी जाएगी। नियमों का पालन न करने वालों पर 55 हजार का जुर्माना लगाया जायेगा।

पंज्युखू संस्कृति समिति की बैठक में संस्कृति संरक्षित करने के लिये बनाए गए सभी नियम बार उत्तरायण होते ही लागू कर दिये गये हैं। केमवीएस सभागार में हुई समिति की बैठक में रं समाज की सांस्कृतिक विरासत को बचाने, शादियों में देव परम्परा बनाए रखने के प्रस्ताव पारित किये गये। समिति के अध्यक्ष महिराज गर्ब्याल ने कहा कि रं विवाह कैलाश परम्परा के अनुसार सादगी से सम्पन्न होता है। वर्तमान में मेहन्दी, हल्दी रस्म के नाम पर शराब परोसने की होड़ होने लगी है। इससे युवा पीढ़ी पर दिशाविहीन हो रही है। उन्होंने कहा कि रं संस्कृति संरक्षण के लिये दारमा, चौदास और व्यास घाटी के गाँवों में जल्द ही बैठक की जायेगी।

समिति के निर्णय की समाज में सराहना की जा रही है। लोगों का मानना है कि आधुनिक फैशन में अनावश्यक प्रभाव हमारे समाज में फैल रहा है, उसे रोकने के लिये सख्त कदम उठाने जरूरी हैं। देखा-देखी होने वाले परम्पराओं से दूषित वातावरण ज्यादा हो रहा है। पंज्युखू समिति के संरक्षक कृष्णा गर्ब्याल ने कहा कि वर्तमान के हालात देखते हुए यह सब जरूरी हो गया है और जो नियमों का पालन नहीं करेगा उसे जुर्माना के रूप में भागी होना पड़ेगा। यह सब समाज में सुधार के लिये महत्वपूर्ण कदम है। इससे समाज में आर्थिक रूप से भेदभाव भी नहीं रहेगा। श्री कृष्णा गर्ब्याल कहते हैं कि सदियों पुरानी हमारी परम्परा को हमारे पूर्वजों ने संजोने के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत के रूप में सौंपा है। इस परम्परा को आगे बढ़ाना हमारा दायित्व है।

बैठक में हरक सिंह बुदियाल, पूरन सिंह बुदियाल, मान सिंह, नेपाल से आए अशोक बोरा, यशोदा तिंकरी ने नियमों को कठोरता से लागू करने पर जोर दिया। समिति के ऐलान के बाद रं समाज से जुड़े तमाम लोगों ने इस प्रकार के कदम की सराहना करते हुए सभी से सहयोगी बनने की अपील की है। डीएस नपलच्याल कहते है। कि सदियों से संजो कर रखी पूर्वजों की परम्परा को सहेजना है। हरक सिंह बुदियाल बताते हैं कि सन् 2000 से समाज में विविध सुधारों को लेकर पुज्युखू समिति कार्य कर रही है।

ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार करने को लेकर दो प्रशिक्षण

पिथौरागढ़। जिले के तीन विकास खंडों की न्याय पंचायतों में ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार करने को लेकर दो प्रशिक्षण जारी है। न्याय पंचायत देवल, गुरना, बड़ावे में पंचायत प्रतिनिधियों को भौगोलिक परिस्थितियों के मुताबिक योजना बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर रेखीय विभागों से भी ग्राम पंचायतों के साथ बैठक योजना बनाने की अपील की गई। कहा कि तभी इस प्रशिक्षण की सार्थकता धरातल पर दिखेगी।

तीन न्याय पंचायतों में आयोजित प्रशिक्षण में पंचायतीराज उत्तराखण्ड से सम्बृद्ध संस्था सोसायटी फॉर एक्सन इन हिमालया पिथौरागढ़ के मास्टर ट्रेनर्स रेखा रानी, कला नगन्याल, हीरा सिंह मेहता, सन्तोषी नगन्याल, यशवंत सिंह बृजवाल, अंकिता पाठक, अंजलि कुमारी, भागीरथी पोखरिया, रेखा जोशी, रेखा धामी, नीतू खर्कवाल, भगवत पाण्डेय ने ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार करने में भौगोलिक परिस्थितियों का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि जलवायु, मुद्रा, पानी तथा बाजार का ध्यान रखते हुए हमें योजना बनानी चाहिए।

गाँव की आवश्यकता तो सबसे पहले है, लेकिन परिस्थितियों का ध्यान दिए बगैर बनने वाली योजनाएं असफल हो जाती है।

पशुपालन, उद्यान, दुग्ध विभागों के रेखीय अधिकारियों द्वारा भी अपने विभागों की जानकारी दी गई। मास्टर ट्रेनर्सो ने कहा कि ग्राम पंचायतों का अध्ययन करने के बाद ही योजना तैयार की जानी चाहिए। रेखीय विभागों के अधिकारियों को सलाह दी कि अब वे ग्राम पंचायतों के साथ मिलकर काम करना शुरू करें। इस अवसर पर कनालीछीना विकास खण्ड के न्याय पंचायत देवल में देवल की ग्राम प्रधान आशा पाल, लेखनाकाण्डा की प्रधान सुश्री पूजा, उप प्रधान से सलमा बेगम, उर्मिला देवी, सहायक कृषि अधिकारी नारायण राम विकास खण्ड पिथौरागढ़ के न्याय पंचायत गुरना में ग्राम प्रधान ऊषा तिवारी, उप प्रधान गोविन्द राम, उद्यान विभाग के प्रभारी मुकेश पन्त, पशुधन प्रसार अधिकारी भुवन चन्द्र जोशी, आईटी सेल के जगदीश लोहनी विकास खण्ड मूनाकोट के न्याय पंचायत बड़ावे में उप प्रधान जगदीश चन्द्र जोशी, ग्राम पंचायत विकास अधिकारी प्रेम सिंह तोमक्याल, दुग्ध संघ की दीपा पाण्डेय, दमयन्ती देवी आदि मौजूद रहे।

पंचायतीराज उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण में विशेष सफाई अभियान चलाया गया। सफाई में इकट्ठा हुए 29 किलो कूड़े को गाँवों से लाकर नगर पालिका पिथौरागढ़ के कूड़ेदान में डाला गया। प्रशिक्षण में ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार करनी की विधि पर पंचायत प्रतिनिधियों तथा रेखीय विभागों के अधिकारियों को टिप्स दिए गए।

जिले के विकास खंड पिथौरागढ़, मूनाकोट, कनालीछीना में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षण स्थल के आस पास फैले सूखे कूड़े को इकट्ठा किया गया। प्रशिक्षणार्थियों ने भी कूड़े को जमा करने में उत्साह के साथ भाग लिया। इस कूड़े को इन गाँवों से लाकर शहर के कूड़ेदान में डाला गया। ग्राम पंचायत विकास योजना में कूड़े के निस्तारण को प्रमुखता से योजना के रूप में शामिल करने को कहा। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायतों को ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन को अपनी योजनाओं में शामिल करना चाहिए, तभी ग्राम पंचायतों को साफ-सुथरा रखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि रेखीय विभागों के अधिकारियों को भी कूड़ा निस्तारण के लिए अपने विभागों में इस योजना को शामिल करना होगा।

कनालीछीना विकास खण्ड में क्षेत्र पंचायत सदस्यों एवं रेखीय विभागों के अधिकारियों के प्रशिक्षण का उद्घाटन खण्ड विकास अधिकारी जगदीश प्रसाद टम्टा ने किया। इस अवसर पर युवा कल्याण अधिकारी हेमा पाण्डे, आशा फेशेलेटर मंजू पाण्डे, पूर्व एडीओ लक्ष्मी दत्त तिवारी, वार्ड मेम्बर्स जानकी भट्ट मौजूद रहे।

आदि कैलास यात्रा की तैयारियां

नैनीताल। कुमाऊँ मण्डल विकास निगम आदि कैलास यात्रा की तैयारियों में जुट गया है। मई में होने वाली यात्रा के लिये जो पैकेज है उसके अनुसार काठगोदाम से यात्रा के लिये 45000 रुपये का यह पैकेज होगा। जबकि धारचूला से यात्रा करने के लिये 35 हजार का पैकेज बनाया गया है।

आदि कैलास यात्रा को दो तरीकों से कराया जाएगा। इसमें यात्रा का संचालन काठगोदाम से वापस काठगोदाम और धारचूला से धारचूला में कराया जाएगा। आदि कैलास और ऊँ पर्वत यात्रा का शुभारम्भ काठगोदाम से करने के बाद पिथौरागढ़ में रात्रि विश्राम होगा। वहाँ से सात दिन की यात्रा करने के बाद आठवें दिन इसे वापस काठगोदाम में समाप्त किया जाएगा। धारचूला से शुरु होने वाली यात्रा का सातवें दिन धारचूला में हीह समापन होगा।

यात्रा में शामिल होने के लिये बुकिंग सुविधा उपलब्ध है। आदि कैलास यात्रा के लिये चीफ रिर्जेवेशन सेन्टर और निगम की आधिकारिक वेबसाइट के अलावा टीआरसी में सम्पर्क करके यात्रा के लिये बुकिंग करवाई जा सकती है। यात्रा के दौरान निगम की ओर से ट्रान्सपोर्ट, भोजन, प्राथमिक उपचार के साथ रहने की व्यवस्था कराई जाती है। इसके अलावा नाभि गाँव में ग्रामीणों के घरों में बनाए गए होम स्टे में लोगों के रहने की व्यवस्था की जाएगी। केएमवीएन के महाप्रबन्धक ए.पी.वाजपेयी ने बताया है कि यात्रा तैयारी है।

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

सप्ताह के पर्व

माघ शुक्ल पक्ष
1 फरवरी- जया एकादशी
3 फरवरी- प्रदोष त्रयोदशी
5 फरवरी- माघी पूर्णिमा
9 फरवरी- गणेश चतुर्थी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)